सूक्तियाँ
जन संपर्क समिति, राष्ट्रीय गांधी जन्म शताब्दी समिति
६, राजघाट कालोनी, नई दिल्ली-१

सभी प्रसंगों के लिए गाँधीजी की सूक्तियाँ

गाँधीजी की सूक्तियों का यह संग्रह चार शीर्षकों में विभाजित किया गया है :—

१. अहिंसा	प्रेम की शक्ति
२. धर्म	स्थिर मान्यताएँ
३. शान्ति का अर्थशास्त्र	मार्गदर्शक समाज-सिद्धान्त
४. जीवन के सिद्धान्त	मार्गदर्शक वैयक्तिक-सिद्धान्त

सूक्तियों का चयन निम्नलिखित पुस्तकों में से किया गया है और उन किताबों की पृष्ठ संख्या सहित उनके संक्षिप्त नाम भी प्रामाणिकता के लिए उल्लिखित हैं।

डे बुक ऑफ़ थॉट्स	:	डी० बी० टी०
गांधियन जेम्स	:	जी० जी०
ग्लोरियस थॉट्स ऑफ गांधीजी	:	जी० टी० जी०
ग्रेट थॉट्स	:	जी० टी०
हरिजन	:	एच०
लेनिन एण्ड गांधी	:	एल० एण्ड० जी०
महात्मा गांधीजीज़ सेइंग्स	:	एम० जी० एस०
माइण्ड आफ महात्मा गांधी	:	एम० एम० जी०
प्रेशस पर्ल्स	:	पी० पी०
स्पीचेज़ एण्ड राईटिंग्स	:	एस० एण्ड० डब्ल्यु०
विट एण्ड विज़डम ऑफ़ गांधी जी	:	डबल्यु० डबल्यु० जी०
यंग इण्डिया	:	वाय० आई

प्रत्येक सूक्ति वास्तविक गांधी-उक्ति की छाप सहित, एक सम्पूर्ण विचार प्रकट करती है। आम जनता के विचारों को आलोकित करने के लिए ये प्रकाश-पुंज विविध रूप से उपयोगी सिद्ध होंगे, ऐसी आशा है।

अखबारों एवं पत्र-पत्रिकाओं द्वारा इनका उपयोग होते रहने के अतिरिक्त, आम जनता के लिए सड़कों के किनारे सूचना-पटों पर, सार्वजनिक संस्थाओं में "आज का विचार" व्यक्त करने वाले साइन बोर्डों पर, घरों व दूकानों के बाहर प्रदर्शनार्थ लगाये जाने वाले छपे हुए या रंगीन पोस्टरों में, मेज पर सजाने योग्य सूक्ति-फलकों तथा दीवारों पर लगाने योग्य सूत्रों एवं सिद्धान्तों-वाक्यों आदि में गांधी जी के इन विचारों के अंकित होने से अधिकाधिक लोग अपने गाँधी को अधिक से अधिक जान व पहचान (समझ) सकेंगे।

गाँधी-शताब्दी के इन ऐतिहासिक दिनों में हम गांधी का संदेश लेकर देश विदेश के सभी लोगों तक पहुँचाने का भरपूर प्रयास करें। जन-चेतना के सभी साधनों एवं सार्वजनिक शिक्षण के समस्त माध्यमों को भी इस गाँधी-विचार-प्रचार कार्य भागीरथ-प्रयत्नों में अपना सहयोग प्रदान करना चाहिये, जिससे कोई भी जानकारी प्राप्त करने से वंचित न रह जाय कि यह 'गांधी शताब्दी' का पावन सुअवसर है और इस प्रसंग पर उसका भी कुछ कर्तव्य है।

अहिंसा—
प्रेम की शक्ति

१. असहिष्णुता हिंसा का ही स्वरूप है और इसीलिए अपने आचार-धर्म के विरुद्ध है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१८

२. अहिंसा के शब्दकोष में पराजय का तो स्थान ही नहीं है। एम. जी. एस.—२१

३. तिरस्कार या घृणा का अन्त कभी न्याय में नहीं होता; वह केवल बदले की भावना या अंधा गुस्सा है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१०३

४. उम्दा से उम्दा ध्येय के लिए भी हिंसक तरीकों का 'मैं सुलह न कर सकने वाला' विरोधी हूं।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी. ८६

५. एक सत्याग्रही हमेशा मन्दी या अवनति के लिए तैयार रहता है, यद्यपि उसकी पहले से धारणा नहीं बनाता। वह अपने विरोधी का कभी बुरा नहीं चाहता। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१०५

६. जो लोग स्वेच्छा से कष्टों में से गुजरते हैं, वे खुद ऊंचे उठते हैं और सारी इन्सानियत को ऊपर उठाते हैं। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—६१

७. अहिंसा के उपासक को केवल एक ही भय होता है और वह है ईश्वर का।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१०३
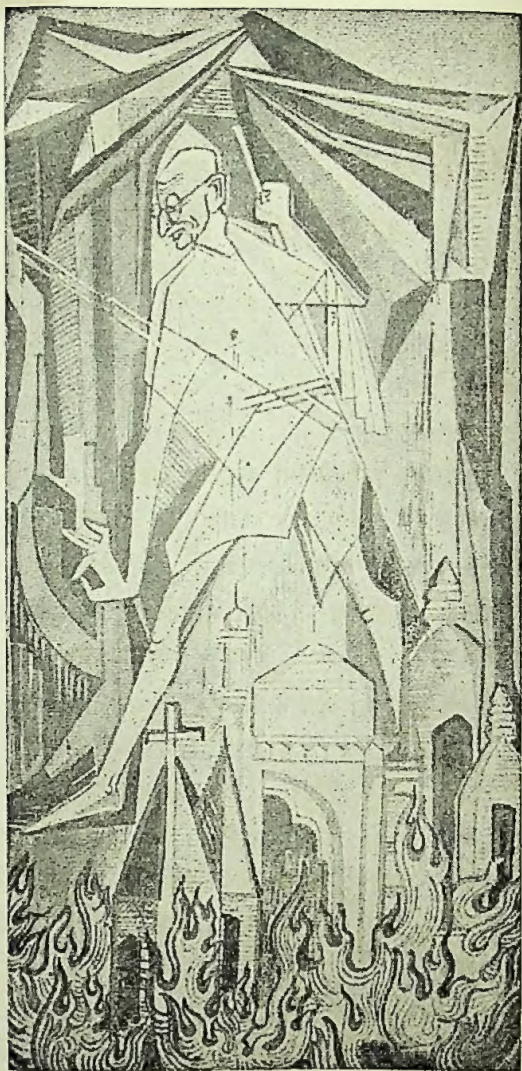
८. मैं पुरुषों की तुलना में महिलाओं से उच्चतर श्रेणी के प्रेम और सहिष्णुता की अपेक्षा रखता हूँ।

एम. एम. जी.—२६६

९. सत्याग्रह हमें जीने के साथ मरने की भी कला सिखाता है। एम. एम. जी.—१६८

१०. जो अधिक देते हैं उन्हीं से और अधिक पाने की अपेक्षा हमेशा रहती है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—८०

११. पारस्परिक सहिष्णुता एवं सहनशीलता के लिए जीना और जीने देना ही जीवन का नियम है। डी. बी. टी.—७०

१२. पारस्परिक सहिष्णुता ही अहिंसा है। एम. एम. जी —१२८

१३. प्रेम रहित जीवन मृत्यु है। जी. टी. जी.—१६६

१४. बहादुरी पर पुरुष का एकाधिकार नहीं है। नारी को भी पुरुष के समान अपने आपको स्वाधीन समझना चाहिए। एम. एम. जी.—२९७

१५. अहिंसा महानतम गुण है। कायरता महानतम अवगुण। एम. जी. एस.—११

१६. घृणा, जिससे की जाती है उसको नहीं वरन् घृणा करने वाले को ही हानि पहुंचाती है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१०५

१७. अहिंसामय सत्य के सहारे समस्त विश्व को आप अपने चरणों में झुका सकते हैं। एम. एम. जी.—१६७

१८. सत्य को खोजने वाला, प्रेम-धर्म को मानने वाला कोई चीज कल के लिए उठा नहीं रख सकता। जी. टी. जी.—१६८

१९. सत्याग्रही अहिंसा का व्रती होता है और मन, वचन तथा कर्म से उसका ही पालन करता है। एम. एम. जी.—१७२

२०. प्रेम कभी माँगता नहीं, वह तो हमेशा देता ही रहता है। पी. पी.—१४१

२१. अहिंसा स्वर्ग का साम्राज्य है।

एम. एम. जी.—१२५

२२. इस संसार में यदि हम वास्तविक शान्ति पाना चाहते हैं, तो उसकी शुरूआत हमे बच्चों से करनी होगी। जी. टी. जी.—४७

२३. यदि अहिंसा ही हमारी हस्ती का कानून है तो भविष्य नारी के हाथ में है। जी. टी. जी.—१६३

२४. अहिंसा उसी प्रकार हम मनुष्यों का धर्म (कानून) है, जिस प्रकार हिंसा हिंसक जानवरों का।

एम. एम.—२६१

२५. अहिंसा, एक अपरिवर्तनीय आचार-धर्म है।

एम. एम. जी.—११४

२६. अन्याय के विरुद्ध न्याय के संघर्ष को जीतने के लिए एक भी पूर्ण सत्याग्रही पर्याप्त है।

एम. एम. जी.—१६५

२७. अहिंसा जोड़ने वाली शक्ति है। यह विभिन्नता में से एकता की खोज निकालती है।

डी. बी. टी.—५४

२८. हिंसा, या तो हिंसक की इच्छा के अधीन होने पर या प्रतिहिंसा की प्रतिक्रयिा पर पनपती है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१०४

२९. जैसे सत्य और अहिंसा, चुने हुए कुछ लोगों के लिए ही नहीं हैं, ठीक उसी प्रकार से आत्म-संयम भी चुने हुए लोगों के लिए ही नहीं अपितु समूची मानवता के लिए है।

एम. एम. जी.—२९०

३०. सत्याग्रह महत्तम शक्ति है क्यों वह आत्मा की उच्चतम अभिव्यक्ति है। एम. एम. जी.—१७४

३१. मृत्यु किसी भी समय आशीर्वाद तुल्य है, और वह उस शूर-वीर (सत्याग्रह) के लिए तो दुहरे आशीर्वाद के समान है, जो अपने उद्देश्य अर्थात् सत्य के लिए मरता है। डी. बी. टी.—१४

३२. घृणा सदा ही मारती है, प्रेम कभी मारता नहीं।

जी. टी. जी.—१६६

३३. अगर कोई साधन को सम्हाले तो साध्य अपनी सम्हाल स्वयं कर लेगा।

डी. बी. टी.—१४

३४. मित्रता का नियम न्याय नहीं बल्कि आत्म-समर्पण रहा है, समर्पण के सिवा कुछ भी नहीं।

जी. टी. जी.—११२

३५. यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि हिंसा पर आधारित निर्माण कभी स्थायी नहीं बन सकता।

एम. एम. जी.—२५४

३६. किसी निरपराध आदमी का बलिदान, दूसरों को मारने वाले लाखों आदमियों की बलि से भी लाखों गुना अधिक प्रभावकारक है।

एम. एम. जी.—१३६

३७. सच्चा त्याग अपने आपको न व्यक्त करता है, न प्रतिदान चाहता है। वह तो अपने साथ अपना ऐसा आनन्द लाता है, जो दूसरी तमाम खुशियों से कहीं अधिक होता है।

एम. एम. जी.—१७०

३८. केवल अहिंसक विज्ञान ही विशुद्ध लोकतन्त्र की ओर ले जा सकता है। एम. एम. जी.—१३१

३९. अहिंसा, अनुशासन का सारतत्व है।

एम. एम. जी.—२२३

४०. जब कभी आपको किसी विरोध का सामना करना पड़े तो उसे प्रेम से जीतिये।

४१. जीवन का नियम यदि प्रेम न होता तो मृत्यु के बीच में जीवन टिक नहीं सकता था।

एच.—१६३६

४२. सत्याग्रही के लिए समय की कोई सीमा नहीं होती। अतः सत्याग्रह में 'पराजय' जैसी जैसी कोई चीज ही नहीं है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१०५

४३. आपको डराने की आवश्यकता नहीं है कि अहिंसक तरीका धीमी गति और लम्बी अवधि वाला होता है। इसकी गति तीव्रतम होती है, यह दुनिया देख चुकी है, क्योंकि यह सबसे अचूक तरीका है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१०५

४४. शक्ति शरीरिक क्षमता से नहीं वरन् अदम्य इच्छा-शक्ति में से आती है। जी. टी. जी.—२६५

४५. किसी योद्धा के लिए युद्ध स्वयं ही विजय है, क्योंकि उसे केवल उसमें ही आनन्द मिलता है।

एम. जी. एस.—२१

४६. भीतरी घृणा को प्रश्रय देना तो खुली लड़ाई से भी बदतर हो सकता है। एम. एम. जी.—३२८

४७. यह जानते हुए कि हम सब कभी भी एक समान या एक सा विचार नहीं करेंगे और हम सत्य को विभिन्न खण्डों में तथा भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों एवं पहलुओं से ही देखेंगे, परस्परिक सहिष्णुता आचार-धर्म का सुनहला-नियम है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१८

४८. सत्याग्रह की शक्ति की आग्रहपूर्ण खोज, और उसे पाने का दृढ़ संकल्प है। एम. एम. जी.१६७

४६. यदि हमें अहिंसक होना है तो सबसे गये गुजरे और सबसे तुच्छ इन्सान के पास जो चीज नहीं हो सकती उसकी आकांक्षा भी हमें नहीं करनी चाहिए।

एम. जी. एस.—१५

५०. अगर हम सिद्धात के लिए अपने जीवन की आहुति देने को तैयार हैं, तो धन-दौलत नगण्य है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. ज़ी.—८६

५१. अहिंसक युद्ध का अन्त हमेशा ही समाधान में होता है इसमें विरोधी को नीचा दिखाने तो गुंजाइश ही नहीं है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१०८

५२. सत्याग्रह की खूबी यह है कि करने वाले के पास सहज आता है। उसे खोजने के लिए किसी को कहीं बाहर नहीं जाना पड़ता।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१०६

५३. निष्क्रय-प्रतिकार का शाब्दिक हिन्दी अर्थ 'सत्य की शक्ति' है। मैं समझता हूँ, टालसटॉय ने इसे आत्म-बल या प्रेम-बल भी कहा है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—८८

५४. अहिंसा स्वभावतः सत्ता को छीन नहीं सकती, न वह उसका लक्ष्य हो सकता है। पर वह सत्ता का नियमन व मार्गदर्शन असरकारक ढंग से करती है। एम. एम. जी.—१३२

५५. अहिंसा, कार्यरत 'रेडियम' जैसी है। शांत, सूक्ष्म व अदृश्य ढंग से वह कार्य करती है तथा सारे समाज की चैतन्यता प्रदान करती है।

एश.—१६३८

५६. वीरतापूर्वक सही हुई वास्तविक यातना, पाषाण-हृदय को भी पिघला देती है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—६१

५७. अपने पड़ौसियों से यदि हमें कोई प्यार नहीं है तो कितना भी क्रान्तिकारी परिवर्तन हमारा कुछ भी भला नहीं कर सकता।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—६६

५८. प्रेम संसार की सबसे अधिक बड़ी शक्ति होते हुए भी कल्पनातीत रूप से नम्रतम है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—६६

५६. संघर्ष से सम्बन्धित कार्य का प्रत्येक अंग उतना ही महत्व रखता है जितना कि उसका दूसरा कोई अंग। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१०५

६०. कोई निर्बल मनुष्य क्वचित ही न्यायी होता है। एक बलवान किन्तु अहिंसक मनुष्य क्वचित ही अन्यायी होता है। डी. बी. टी.—६

६१. क्रोध और असहिष्णुता, दोनों सही समझदारी के जुड़वाँ दुश्मन हैं। जी. टी. जी.—२२

६२. आत्मरक्षा के लिए मारने की शक्ति अनिवार्य नहीं है; उनके लिए तो मरने की ताकत चाहिए।

एम. जी. एस.—१३

६३. अहिंसा, सर्वोच्च श्रेणी की सक्रिय शक्ति है।

एम. एम. जी.—११५

६४. मैं मानता हूं कि ताकतवर, कमजोर का शोषण करेगा, इसलिए कमजोर रहना अपराध या पाप है। एम. एम. जी.—१२१

६५. अहिंसा का मार्ग हिंसा के मार्ग से कहीं ज्यादा साहस माँगता है। एम. एम. जी.—११६

६६. क्रोध अहिंसा का शत्रु है। और अहंकार ऐसा दैत्य है जो अहिंसा को निगल जाता।

जी. जी.—७

६७. शक्ति, जितनी अधिक कार्यक्षम होगी उतनी ही अधिक वह शांत व सूक्ष्म होगी। प्रेम दुनिया में सूक्ष्मतम शक्ति है। जी. टी. जी.—१७०

६८. वीरोचित उदारता अहिंसा का एक अंग है। उसके बिना अहिंसा पंगु है। जी. जी.—३२

६९. अहिंसा और सत्य का रास्ता उस्तरे की धार के समान तीक्ष्ण हैं। डी. बी. टी.—९

७०. प्रेम यदि नैतिक मूल्यों के दायरे में पूर्णतया सीमित न रहे तो वह जहर में परिणत हो जाता है।
जी. टी. जी.—१७०

७१. अहिंसा नम्रता की पराकाष्ठा है। निर्भीकता के बिना अहिंसा असंभव है। पी. पी.—४

७२. अहिंसा नम्रता की पराकाष्ठा है।
डी. बी. टी.—५५

७३. राष्ट्रीय जीवन में सत्य और नम्रता का समावेश करना ही सत्याग्रह है। वाय. आई.—१९२०

७४. अहिंसा का प्रधान आशय ही यह है कि वह हमारे प्रतिरोधियों के रुख को हमारे प्रति कोमल बनाये, न कि कठोर। एम. एम. जी.—१२४

७५. ईश्वर ही अहिंसक (सत्याग्रही) की ढाल है।
एम. एम. जी.—१२४

७६. अहिंसा ही उदारता कीं तरह, अवश्य ही घर से शुरू होनी चाहिये। डी. बी. टी.—१०५

७७. लोगों के बल पर कायर ही नाचता है। दिल का शूरमा अकेले जूझकर चमकता है।
जी. टी. जी.—२६५

७८. विश्वास करना एक गुण है। निर्बलता ही अविश्वास की जननी है। जी. टी. जी.—२७७

७९. शौर्य शरीर का नहीं आत्मा का गुण है।
एम. एम. जी.—६१

८०. अहिंसा मेरे लिए एक नीति एक धर्म एक सिद्धान्त है।

डी. बी. टी.—२७

८१. सर्वोच्च नैतिक कानून यह है कि हम मानव मात्र के हितार्थ निरपेक्ष भाव से कार्य करें।

जी. टी. जी.—१८६

८२. जीवन का दान महादान। जो व्यक्ति सचमुच उसे देता है वह समस्त वैषम्य को निरस्त्र कर डालता है।

डी. बी. टी.—१५५

८३. यदि हम संकल्प-शक्ति को विकसित करें तो हम देखेंगे कि हमें शस्त्र-बल की आवश्यकता ही नहीं है।

जी. टी. जी.—२६६

८४. निर्भयता, आध्यात्म की अनिवार्यता है। कायर कभी नीतिवान नहीं हो सकते।

वाय. आई.—१६२१

८५. अहिंसा मनुष्य जाति के हाथ में सबसे बड़ी शक्ति है।

एच—१६३५

धर्म—
गांधी जी के अनुसार

१. सत्य और अहिंसा मेरे ईश्वर हैं।

जी. टी. जी.—१२३

२. नम्रता रहित सेवा, अहंकार और स्वार्थ है।

डी. बी. टी.—२१

३. मेरे लिए, ईश्वर सत्य और प्रेम है ईश्वर नीति और चरित्र है, ईश्वर निर्भीकता है, ईश्वर प्रकाश और जीवन का स्रोत है, फिर भी वह इन सबसे ऊपर तथा आगे है। ईश्वर अन्तरात्मा है। वह नास्तिक की नास्तिकता भी है, क्योंकि वह अपने निस्सीम प्रेम के कारण नास्तिक को भी जीने देता है।

वाय. आई.—१९२५

४. सत्य की खोज करने वाले को धूल से भी अधिक नम्र होना चाहिए। संसार धूल को अपने पैरों के नीचे रौंदता है, पर सत्य के ढूँढने वाले को इतना नम्र होना चाहिए कि वह धूल भी उसे रौंद सके। तभी, और ऐसा होने पर हम सत्य की झलक पा सकेंगे।

एम. एम. जी.—४३

५. सही रास्ते का प्रथम सूत्र है सच बोलना, सत्य सोचना और सत्य ही कहना।

जी. टी. जी.—२७९

६. प्रार्थना, व्यक्ति की अपनी अयोग्यता व दुर्बलता की स्वीकारोक्ति ही तो है। जी. टी. जी.—२०५

७. आप चाहे कुछ भी करें, पर अपने व दुनिया के प्रति सच्चाई बरतें। एच.—१९३७

८. प्रार्थनामय व सद्हेतुपूर्ण प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाता और मनुष्य की सफलता ऐसे प्रयासों में ही निहित है। फल ईश्वर के हाथ में है।
वाय. आई.—१९३१

९. लाखों मूक हृदयों में जो ईश्वर हैं उसके सिवाय और किसी ईश्वर को मैं नहीं मानता।
एच.—१९३९

१०. भीतर के न्यायाधीश का भय बाहर वाले न्यायाधीश से अधिक भयंकर है। डी. बी. टी.—३१

११. दुनिया के सारे धर्मशास्त्रों का समर्थन पाकर भी गलती किसी तरह की रियायत का दावा नहीं कर सकती। जी. टी. जी.—९५

१२. प्रार्थना, नम्रता की पुकार है। यह आत्म-शुद्धि और अन्तः खोज की गुहार है।
डीं. बी. टी.—९३

१३. असत्य और हिंसा जुड़वां भाई-बहन हैं।
डी. बी. टी.—१०१

१४. विवाद और धोखा निस्संदेह सभी धर्मों के बारे में है। जहां प्रकाश है वहीं छाया भी है।
डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.— १५

१५. किसी धर्म को उसकी निकृष्टतम बुराई से नहीं, बल्कि उस अच्छाई से परखना चाहिये, जो उसने प्रतिपादित की है। क्योंकि उसकी वह अच्छाई ही; और केवल वही; उन्नति करने का साधन, नहीं तो उच्च स्तर का आदर्श बनाई जा सकती है।
डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१६

१६. आत्म विज्ञान का निरूपण धर्मों द्वारा होता है।
डब्ल्यु. डब्यु. जी.—१७

१७. गलती की स्वीकारोक्ति उस झाड़ू के समान होती है, जो कूड़ा करकट को झाड़कर सतह को पहले से ज्यादा साफ कर देती है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—३६

१८. पश्चात्ताप का पवित्रतम प्रकार है, दोष को फिर कभी न दोहराने के वचन के साथ, अपनी गलती की स्पष्ट स्वीकारोक्ति उनके सामने करना, जिनको ऐसा कराने के अधिकारी हैं।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—३६

१९. जो ज्ञान मष्तिक तक ही सीमित रहता है, हृदय के भीतर प्रवेश नहीं कर पाता, वह जीवन के संकटपूर्ण अनुभव के क्षणों में किसी काम का नहीं होता।

डब्ल्यु. डब्ल्यु.—४२

२०. अगर हम ईश्वर से डरें तो मनुष्य का डर छूट जायेगा।

एस. एण्ड डब्ल्यु.—३३०

२१. प्रसन्नता, आप क्या पा सकते हैं, उस पर नहीं, अपितु आप क्या दे सकते हैं उस पर निर्भर करती है।

डी. बी. टी.—३

२२. गरीबों के लिए कार्य करने से बढ़कर ईश्वरोपासना का और कोई ढंग मैं सोच नहीं सकता।

डी. बी. टी.—४

२३. ऊँच और नीच के भेदभाव भुलाकर मानव-मात्र को समान समझने से बढ़ कर त्याग हमारे लिए दूसरा हो ही नहीं सकता।

जी. टी. जी.—२३८

२४. प्रार्थना, सुबह की चाभी और शाम की चिटकनी है।

वाय. आई.—१९३०

२५. मेरा धर्म कहता है कि जो कष्ट सहने को तैयार हो वही ईश्वर की प्रार्थना कर सकता है।

जी. टी. जी.—१०६

२६. आदर्शों को व्यवहारिक अवश्य होना चाहिये, अन्यथा वे सक्षम नहीं हैं। जी. टी. जी.—१४१

२७. हिन्दू धर्म, अनमोल रत्नों से भरा अगाध समुद्र है। जी. टी. जी.—१३४

२८. सच्चा पूजन, मूर्ति का पूजन नहीं है। मूर्ति में विराजमान ईश्वर का पूजन ही सच्चा पूजन है।
जी. टी. जी.—१४३

२९. सभ्यता का वास्तविक अर्थ आवश्यकताओं को बढ़ाते जाना नहीं, वल्कि जानबूझकर तथा स्वेच्छा से उन्हें घटाते रहना है।
एम. एम. जी.—१८९

३०. त्याग ही जीवन है आसक्ति मृत्यु है।
एम. एम. जी.—१९२

३१ जब लोग सत्य में सौंदर्य का दर्शन करना सीखेंगे, तभी सच्ची कला पनपेगी। एम. एम. जी.—५७

३२. प्रार्थना में शब्द-रहित भाव का होना भाव-रहित शब्दों से वेहतरीन है।
डी. वी. टी.—१९६

३३. ईश्वर और सत्य एक दूसरे से वदले जा सकने वाले शब्द हैं। जी. जी.—२४४

३४. धर्म विहीन नैतिक जीवन बालु पर बने घर के समान है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—४९

३५. श्रद्धा रहित मनुष्य, सागर के बाहर फेंकी गयी उस बूंद के समान है, जिसका विनाश अवश्यम्भावी है।
जी. टी. जी.—९९

३६. जो उपयोगी है वह सुन्दर भी हो सकता है।
एम. एम. जी.—५८

३७. भगवान अच्छी बुरी सभी चीजों का सही लेखा-जोखा रखते हैं। उनसे बेहतर हिसाबी इस धरती पर दूसरा कोई नहीं है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.— २८

३८. ईश्वर कोई वादलों में रहने वाली शक्ति नहीं है। ईश्वर तो हमारे भीतर रहने वाली एक अदृश्य शक्ति है, जो उँगुलियों की खाल से सटे हुए नाखूनों से भी अधिक हमारे समीप है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—२६

३६. ईश्वर को अन्य किसी नाम से पुकारा जा सकता है, यदि जीवन के जीवन्त कानून का उससे बोध होता है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—२६

४० पहली चीज जो ढूँढनी है, वह है सत्य। सौंदर्य और अच्छाई तो उसके वाद आपमें स्वयमेव जुड़ जाएँगे। जी. टी. जी.—२७६

४१. मुझे अपने धर्म को पूर्णतया समझ लेने से पूर्व ही दूसरा धर्म अंगीकार करने के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—२०

४२. धर्म-ग्रन्थ, बुद्धि और सत्य से परे नहीं जा सकते। उनसे तो बुद्धि को पवित्र करने तथा सत्य को अलोकित करने की अपेक्षा है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—२०

४३. हिन्दुत्व कोई सम्प्रदाय नहीं है...वह तो एक जीवन पद्धति है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—२०

४४. नैतिकता, वस्तुओं का आधार है और सत्य समूची नैतिकता का सार है। जी. टी. जी.—१८५

४५. "ईश्वर सत्य है" यह मेरे लिए अनमोल खजाना है। और मैं मानता हूँ कि हम में से हर एक के लिये 'वह' ऐसा ही हो।

डी. बी. टी.—१६६

४६. अधिकारों का सच्चा उद्गम कर्त्तय है।

जी. टी. जी.—२३८

४७. केवल सत्य ही टिकेगा। बाकी सब कुछ समय के ज्वार में बह जायेगा। एम. एम. जी.—४७

४८. अहिंसा स्वर्ग का साम्राज्य है ।

एम. एम. जी.—१२५

४९. गौरव, अपने ध्येय तक पहुँचने में है नहीं वल्कि उसे प्राप्त करने के प्रयत्न में है ।

डी. बी. टी.—३६

५० मेरे लिए ईश्वर, प्रेम व सत्य है ।

वाय. आई.—१९२५

५१ प्रार्थना, याचना नहीं है। वह तो आत्मा की अभिलाषा है । पी. पी.—१८२

५२. अपने विचारों को छिपाओ मत । उन्हें प्रकट करना यदि लज्जाजनक है तो उसका चिन्तन करना और भी लज्जाजनक है ।

डी. बी. टी.—५२

५३. समाधान प्राप्ति में नहीं प्रयत्न में है । पूर्ण-प्रयत्न ही पूर्ण-विजय है ।

डी. बी. टी.—५५

५४. जीवन सारी कलाओं से महान है । मैं तो इससे भी और आगे यह कहूँगा कि जिस आदमी का जीवन पूर्णता के निकटतम पहुंचता है, वह सबसे बड़ा कलाकार है । आई. एण्ड. जी.—२१०

५५. मैं वह कला और साहित्य चाहता हूँ जो लाखों से बात कर सके । एम. एम. जी.—५६

५६. सच्चा सौंदर्य अंततः हृदय की पवित्रता में निहित है । जी. टी. जी.—२३

५७. आपके पास जब कोई अच्छा उद्देश्य हो तो आप व्यक्तित्व परम्परा में न उतरें ।

डी. बी. टी.—५

५८. गरीब के प्रति विशुद्ध और सक्रिय प्रेम जहाँ है, ईश्वर भी वहीं है । एम. एम. जी.—४०३

५९. जो मन सितारों के सितारे से एक वार बिंध गया है वह भ्रष्ट नहीं होता।

एम. एम. जी.—४१

६०. ईश्वर ने जिन्हें एक बनाया है, मनुष्य उन्हें कभी विलग नहीं कर सकेगा। डी. बी. टी.—८

६१. दूर का हाल जानने की मेरी इच्छा नहीं है वर्तमान यदि पर्याप्त आकर्षक है तो भविष्य उससे बहुत भिन्न नही हो सकता। एम. एम. जी.—३२६

६२. सच्ची नैतिक, लीक पर चलने में नहीं वरन अपने लिए सच्ची राह खोजने एवं उस पर निर्भीकता से चलने में है।

एम. जी एम.—९

६३. धर्म, मनुष्यों को एक दूसरे से अलग करने के लिए नहीं बल्कि उनको बाँधने के लिए होते हैं।

डी. बी. टी.—१५६

६४. आप यदि आज को सम्हालेंगे तो आने वाले कल को सम्हाल ईश्वर करेगा। डी. बी. टी.—२१

६५. ईश्वर अहिंसक की ढाल है। एम. एम. जी.—१२३

६६. धर्म रहित राजनीतियाँ मृत्युपास के समान हैं क्योंकि वे आत्मा का हनन करती हैं।

डी बी. टी.—२९

६७. इस दुनिया में जिस एक जालिम को मैं स्वीकार करता हूँ वह है अन्तर की शांत आवाज।

जी. टी. जी.—५६

६८. सत्य, स्वभावतः स्वयं प्रत्यक्ष है उनके चारों ओर लगे हुए अज्ञान के जाले आप ज्यों ही हटाते हैं त्यों ही वह साफ चमकने लगता है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—७०

६९. नीति का धर्म से वही सम्बन्ध है जो जमीन में बोये हुए बीज से पानी का होता है। वस्तुतः सच्चा धर्म नैतिकता से एक रूप होता।

एम. जी. एस.—

७०. किसी व्यक्ति का किसी अन्य के ऊपर बड़प्पन या अधिपत्य जताना ईश्वर और मनुष्य के प्रति पाप है। जी. टी. जी.—४१

७१. स्वराज्य से मेरा मतलब है अपने देशवासियों में जो सबसे नीचे हैं उनकी मुक्ति।

७२. आचरण का सुनहरा नियम है आपसी सहिष्णुता।

वी. आई.—१९४६

७३ अहिंसा मेरी श्रद्धा का प्रथम अध्याय है वही मेरे धर्म का अन्तिम अध्याय भी है। पी.पी.—१६६

७४. ब्रह्मचर्य का अर्थ है वासनाओं का मन, वचन और कर्म से नियन्त्रण। जी. टी. जी.—३३

७५. केवल वही मनुष्य ईश्वर का सच्चा भक्त है जो सपने में भी कभी अपनी भक्ति का पुरस्कार नहीं चाहता। जी. टी. जी.—७२

७६. आत्म संयम हमारे अस्तित्व का कानून है। क्योंकि सर्वोत्तम संयम के बिना सर्वोत्तम पुर्णता अप्राप्य है।

एम. जी. एस.—१५

७७. बिना परिश्रम की प्रार्थना वैसी ही है जैसा कि आचरण रहित विश्वास, अर्थात् एक मरा हुआ समुद्री सेब। एम. जी. एस-—१६

७८. हृदय को वासना रहित करने के लिए प्रार्थना एक अचूक उपाय है। एम जी. एस.—१६

७९. सत्य का सदाचार से परे कोई धर्म नहीं है। सर्वोच्च नैतिकता सार्वत्रिक होती है।

एम. जी. एस.—७

८०. ईश्वर नास्तिक की नास्तिकता भी है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१७

८१. मनुष्य के लिए केवल एक ही सार्वत्रिक आचार धर्म हो सकता है और वह है ईश्वर के प्रति निष्ठा।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—२६

८२. ईश्वर न तो उदंड की प्रार्थनाओं पर, ध्यान देता हैं, न उसकी प्रार्थनाओं पर, जो उसके साथ सौदा करते हैं।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—३१

८३. जो रिवाज हृदय के न्याय, विवेक और धर्म के विपरीत हो उसे हमें सहर्ष छोड़ देना चाहिए।

जी. जी.—५४

८४. मनुष्य की आवाज उतनी दूर तक नहीं पहुंच पाती, जो दूरी उससे कहीं छोटी आत्मा की आवाज पार कर जाती है।

जी. टी. जी.—५६

८५. मैं श्रद्धावान मनुष्य हूं। मेरा भरोसा पूर्णतया ईश्वर में है। पहला कदम उठाना ही मेरे लिए काफी है। दूसरा कदम क्या होगा सो तो उसका समय आने पर वह स्वयं स्पष्ट कर देगा।

एच.—१९४०

८६. धर्म का आधार संयम है। जी. टी. जी.—१९२

८७. अन्तरात्मा की आवाज ईश्वर की आवाज है वही प्रत्येक कार्य तथा विचार के औचित्य का अन्तिम निर्णायक है। एम. जी. एस.—७.

८८. पराजय मुझे पस्त हिम्मत नहीं कर सकती। वह केवल मुझे पावन बना सकती है।

जी.जी.—५८

८९. सच्ची कला, आत्मा की एक अभिव्यक्ति है।

जी. टी. जी.—२५

९०. मनुष्य जब अपने बनाने वाले से बनाना चाहता है तब वह किसी तीसरे पक्ष से सलाह नहीं लेता।

डी. बी. टी.—५७

९१. मुझे लगता है कि उपवास से रहित कोई प्रार्थना नहीं है और प्रार्थना विहीन सच्चा उपवास नहीं है। एम. एम. जी.—३५

९२. यदि कोई आदमी ईश्वर में वास्तविक श्रद्धा रखता है, तो उसकी सौरभ उसी प्रकार फैलती है, जैसे गुलाब की सुगन्ध। जी. टी. जी.—१००

९३. मेरा व्यक्तिगत धर्म, किसी से घृणा करने को मुझे अनुलंघनीय आदेशपूर्वक मना करता है।
जी. टी. जी.—२२८

९४. निश्चित अनुभूति की परिधि पर आधारित ईश्वर निष्ठा द्वारा ही विचार की शुचिता सम्भव है।
जी. टी. जी.—२७५

९५. भाग्यवादिता की अपनी मर्यादा है। सभी उपाय समाप्त कर चुकने के बाद ही हम चीजों को भाग्य पर छोड़ देते है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—४३

९६. ईश्वर में यदि आपको सच्ची श्रद्धा है, तो उसके निम्नतम सर्जन के साथ हमदर्दी के बिना आप रह ही नहीं सकते। डी. बी टी.—१००

९७. सच्चा सौंदर्य जो कि मेरा लक्ष्य है—बुराई के प्रति भलाई करने में है। डी. बी. टी.—१३५

९८. आदर्श की विशिष्टता उसकी अपरिमितता में निहित है। जी. टी. जी.—१४२

९९. क्षमा बलवान का विशेषण है।
जी. टी. जी.—१११

१००. दैवीज्ञान किताबों से उधार नहीं लिया जाता। उसकी तो खुद में अनुभूति करनी पड़ती है।
डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—२१

१०१. जो अपने आप में ईश्वर की उपस्थिति से सराबोर हैं, उनके लिए तो परिश्रम करना ही प्रार्थना करना हैं। उनका जीवन एक अविरत प्रार्थना या पूजा की कला है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—३१

१०२. केवल, मनुष्य ही, ज्ञान और समझ के साथ ईश्वर की आराधना कर सकता है। जहाँ ईश्वर भक्ति समझ-विहीन हो, वहां सच्ची मुक्ति नहीं हो सकती, और विना मुक्ति के सच्चा सुख नहीं मिल सकता।

१०३. एक "ईश्वर में विश्वास" ही सब धर्मों की आधार शिला है। जी. जी.—१६६

१०४. नैतिकता के विना कोई धर्म टिक नहीं सकता। एम. जी. एस.—६

१०५. एक ही कदम मेरे लिए पर्याप्त है। एच.—१६४०

शान्ति का अर्थ शास्त्र

१. यदि भारत के सात लाख गाँवों को प्राणवान बनाये रखना है, और समूची सभ्यता के मूल में स्थित शाँति हमें प्राप्त करनी है तो हमें चरखे को तमाम दस्तकारियों का केन्द्र बिन्दू बनाना ही होगा।
एम. एम. जी.—४०७

२. असहिष्णुता, अशिष्टता, व कठोरता, सभी सभ्य समाजों में वर्जित है। एम. एम. जी.—३४२

३. स्वराज्य से मेरा मतलब है अपने देशवासियों में निकृष्टतम के लिए भी स्वतन्त्रता।
एम. एम. जी.—३१७

४. अन्तःकरण के विषयों में बहुमत के कानून का कोई स्थान नहीं है।
जी. टी. जी.—५६

५. असह्य अन्याय के विरुद्ध उठ खड़े होना प्रत्येक राष्ट्र व प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार ही नहीं, कर्त्तव्य-धर्म भी हैं। एम. जी. एस.—२६

६. स्वराज्य जागरूक के लिए है, जो सोया हुआ या अनभिज्ञ है उनके लिए नहीं। पी. पी.—२३६

७. मेरे स्वप्नों के भारत में अस्पृश्यता के अभिशाप के लिए तो कोई स्थान ही नहीं हो सकता।
पी. पी.—२७४

८. शराब की दूकानें, समाज पर एक असह्य अभिशाप हैं। जी. टी.—१०२

९. अस्पृश्यता, विवेक और तर्क के विरुद्ध है और दया, करुणा, तथा प्रेम से, भी मेल नहीं खाती।

जी. टी.—१००

१०. स्वदेशी ही एक मात्र सिद्धान्त है, जो नम्रता और प्रेम के कानून के साथ सहज सामंजस्य है।

एम. एम. जी.—४१२

११ मनुष्य ही सर्वोच्च प्रतिफल है। मनुष्य के अंगों को अनुपयोगी बना देने की प्रवृति मशीन में नहीं होना चाहिए।

वाय. आई.—१६२४

१२. रामराज्य का अर्थ है जनता का शुद्ध नैतिक अधिकार पर आधारित, सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गण राज्य।

एम. एम जी.—३२८

१३. जो राष्ट्र असीम बलिदान दे सकता है वही निःसीम ऊंचाइयों तक उठ सकता है। बलिदान जितना पवित्रतर होगा, उन्नति उतनी ही पवित्रतम होगी।

एम. जी. एस.—१७

१४. लोकमत से पहले ही बना हुआ कानून प्रायः बेकार से भी बदतर होता है।

एम. एम. जी.—३४६

१५. स्वाधीनता एकदम नीचे से शुरू होनी चाहिए। अतएव प्रत्येक गाँव एक पूर्ण सत्ता सम्पन्न या पंचायत होगा। जी. टी. जी.—१५०

१६. सच्ची अर्थ-व्यवस्थाएँ सामाजिक न्याय के पक्ष में होती हैं जिससे सबका भला होता है।

जी. जी.—७०

१७. साहित्यिक शिक्षा का कोई मूल्य नहीं है, यदि वह एक ठोस चरित्र नहीं बना सकती।

जी. टी. जी.—८०

१८. अस्पृश्यता हिन्दुत्व को उसी प्रकार जहरीला बनाती है जिस प्रकार एक बूंद संखिया दूध को विषैला बना देती है।

वाय. आई.—१६२७

१९. एक जीर्ण लम्बी परम्परा वाली सामाजिक बुराई एक ही झटके में झाड़कर दूर नहीं की जा सकती, उसके लिए तो हमेशा धैर्य और पुरुषार्थ की आवश्यकता रहती है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—७०

२०. केन्द्रीयकरण एक व्यवस्था के रूप में, अहिंसक समाज के ढाँचे से मेल नहीं खाता।

एम. एम. जी.—१३७

२१. लोकतंत्र में जीवन का कोई भी पहलू राजनीति से अछूता नहीं रहता।

एम. एम. जी.—३४४

२२. जिस तरह न्याय को भी न्यायी होने के लिए उदार होना पड़ता है, उसी तरह उदारता को भी अपना औचित्य सिद्ध करने के लिए पूर्णरूपेण उचित होना पड़ता है। जी. टी. जी.—१०७

२३. सत्य और अहिंसा का समाजवाद में साकार होना अनिवार्य है। डी. बी. टी.—६७

२४. वर्गहीन समाज को आदर्श, केवल लक्ष्य ही बनाने के लिए नहीं, बल्कि उसे कार्यान्वित करने के लिए है। जी. टी. जी.—९४

२५. दण्ड, शोधन नहीं करता। यदि कुछ करता है तो वह बच्चों को केवल ढीठ बनाता है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१४७

२६. आर्थिक समता अहिंसक स्वराज्य की कुंजी है।

एम. एम. जी.—२५७

२७. किसी व्यक्ति या राष्ट्र के नैतिक कल्याण को हानि पहुँचाने वाले अर्थशास्त्र अनैतिक हैं, और इसलिए पापमय हैं। वाय. आई.—१९२१

२८. वह अर्थशास्त्र असत्य है, जो नैतिक मूल्यों की अवहेलना या उपेक्षा करता है।
एम. एम. जी.—२९३

२९. आर्थिक समता का वास्तविक अर्थ है—"प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार।" एम. एम. जी.—२९७

३०. शिक्षा से मेरा तात्पर्य है, बालक और मनुष्य के तन, मन व आत्मा में से सर्वोतम का चतुर्दिक विकास करना। एम. जी. एस.—११

३१. चर्खा केवल ज्यादा से ज्यादा लोगों की ज्यादा से ज्यादा भलाई के लिए ही नहीं, वरन् सर्वाधिक कल्याण के लिए है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१९९

३२. सच्ची शिक्षा तो अपने सर्वोत्तम का विकास करने में है। भला इन्सानियत की किताब से बेहतर भी कोई और किताब हो सकती है।
जी. टी. जी.—८६

३३. सुधार उतावलेपन से नहीं हो सकता। यदि उसे अहिंसात्मक उपायों से संपादित करना है तो संपन्न और विपन्न दोनों के शिक्षण के द्वारा ही किया जा सकता है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—८०

३४. स्वदेशी वह भाव है जो दूर क ।चीजों को छोड़कर अपनी निकटतम वस्तुओं का उपयोग तथा आदर करने के लिए हमें बाध्य करती है।
एम. एम. जी.—४१०

३६. औषधियां और शराब—शैतान के वे दो हाथ हैं, जिनसे वह अपने असहाय गुलामों को मूढ़ता और नशे में ढकेल देता है। जी. टी. जी.—७९

३६. मशीनीकरण उसी दशा में उचित है, जब अपेक्षित काम को पूरा करने के लिये जनशक्ति बहुत ही कम हो। एम. एम. जी.—२३६

३७. मेरे स्वप्नों का रामराज्य तो राजा और रंक दोनों के समान अधिकरों को सुनिश्चित करता है।

एम. एम. जी.—३२६

३८. व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता किसी ठोस शिक्षण की संरचना के लिये एक अनिवार्य शर्त है।

जी. टी. जी.—२२२

३९. राजनैतिक सत्ता का अर्थ है राष्ट्रीय प्रतिनिधियों द्वारा राष्ट्रीय जीवन का नियमन करने की क्षमता।

जी. टी. जी.—२०२

४०. मैं आधुनिक अर्थ के जातिवाद में विश्वास नहीं करता। यह एक फफोला है और प्रगति में बाधक है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१७१

४१. जनता द्वारा और जनता के लिए जनता का शासन किसी एक आदमी की बोली या बाजी पर नहीं चल सकता, चाहे वह आदमी कितना ही महान हो।

एम. एम. जी.—३६४

४२. सम्परिवर्तन हमारा सिद्धान्त-वाक्य है, परन्तु अव-पीड़न (बल-प्रयोग या जोर जबर्दस्ती) नहीं, क्योंकि वह तो हिंसा की ही सन्तान है।

पी. पी.—३६

४३. चरित्र की पवित्रता एवं मुक्ति, हृदय की शुद्धि पर ही आधारित है।

जी. टी. जी.—४३

४४. केवल लोकमत ही समाज को पवित्र और स्वस्थ रख सकता है।

एम. एम जी.—३४३

४५. स्वस्थ, सुविज्ञ और संतुलित अलोचना सामाजिक जीवन का आधार है।

एम. एम. जी.—३४३

४६. जाति का धर्म से कोई वास्ता नहीं है। वह आध्या-त्मिक और राष्ट्रीय दोनों प्रकार की उन्नति के लिए हानिकारक है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु जी.—१३७

४७. खादी, मेरे लिए भारतीय मानवता की एकता, उसकी आर्थिक स्वतंत्रा व समता का प्रतीक है।

एम. एम. जी.—४०६

४८. कताई में विश्व के राष्ट्रों के प्रति दुर्भावना का नहीं बल्कि सद्भावना और आत्मनिर्भरता का संदेश है।

एम. एम. जी.—४७०

४९. चरखे का प्रत्येक चक्कर शाँति, सदभाव और प्रेम कातता है। एम. एम. जी.—४०७

५०. स्वदेशी की मेरी परिभाषा यह है कि निकटतम पड़ौसी की कीमत पर मैं दूर वाले की सेवा न करूं। एम. एम. जी—४१३

५१. सामाजिक घृणा सम्भवतः अकल्पनीय श्रेणी का निकृष्टतम कुष्ट रोग है।

डी. वी. टी.—१४०

५२. स्वदेशी की भावना में घृणा का स्थान ही नहीं है वह तो निःस्वार्थ सेवा का सिद्धान्त है जिसकी जड़ें पवित्रतम अहिंसा में, अर्थात् प्रेम में हैं।

एम. एम. जी.—४१५

५३. किसी भी जनतन्त्र की पूर्णता उसके पीछे पूर्ण अहिंसा के आधार के बिना सम्भव नहीं हैं।

एम. एम. जी.—३४८

५४. जहां तक भारतीय गांवों का सवाल है, अपरिष्कृतता या अपरिमार्जितता के आवरण में एक सनातन संस्कृति छिपी पड़ी है। उस आचरण को हटा दीजिए। उसकी जीर्ण निर्धनता और निरक्षरता को दूर कीजिए, तो आपको एक सुसंस्कृत, सभ्य एवं स्वतंत्र नागरिक का सर्वोत्तम नमूना मिलेगा।

एम. एम. जी.—३६२

५५. यदि भारत को विशुद्ध विचार पर आधारित विशुद्ध कर्म का अग्रदूत होना है तो ईश्वर बड़े आदमियों के प्रज्ञान या पाण्डित्य को समेट लेगा और गाँवों को, जैसी उन्हें चाहिए, स्वयं अपनी इच्छानुसार अपने आपको व्यक्त करने की शक्ति देगा। एम. एम. जी.—३६३

५६. नगरों को ग्राम जीवन का नमूना अपना लेना चाहिए व उन्हें पुष्ट करना चाहिए।

एम. एम. जी.—३६३

७७. स्वतन्त्रता, अपने साथ अनुशासन और नम्रता लिये रहती है। वाय. आई.—१९२६

५८. समाजवाद का अर्थ है "इस अंतिम तक को भी।"

एम. एम. जी.—२४६

५९. मेरे स्वप्नों के भारत में छुआछूत के अभिशाप के लिए कोई स्थान नहीं हो सकता। पी. पी.—२७४

६०. मैं पूरी नम्रता से यह कहने का साहस करता हूँ, कि यदि भारत, सत्य और अहिंसा द्वारा अपने लक्ष्य तक पहुँचता है तो वह दुनिया को कोई मामूली देन नहीं होगी।

वाय. आई.—१९३१

६१. बुराई राष्ट्रीयता मे नहीं है अपितु संकीर्णता, स्वार्थ-परायणता, अनन्यता में है, जो आधुनिक राष्ट्रों का आधार है और जो बुरा है। —वाय. आई. १९२५

६२. एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र का शिकार करने की अनुमति देने वाला अर्थशास्त्र अनैतिक है।

एम. एम. जीं.—२६३

६३. राजनैतिक सत्ता कोई लक्ष्य नहीं है, बल्कि लोगों को जीवन के हर एक क्षेत्र में अपनी स्थिति उत्तम बनाने योग्य साधनों में से एक है।

एम. एम. जी—३४४

६४ प्रजातन्त्र के बारे में मेरा मत है कि उसके अन्तर्गत दुर्बलतम को भी वही सुअवसर मिलना चाहिये जो सबसे अधिक सबल को प्राप्त हो।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१२४

६५. सत्ता का सबसे असर कारक अमल वही है जो कम से कम चुभता हो। एम.एम.जी.—१३३

६६. अहिंसक असहयोग, प्रजातंत्र के लिए एक आदर्श पाठ है। जी. टी. जी.—६८

३७. अल्प संख्याओं के प्रति उसके व्यवहार से ही सभ्यता की परख होनी चाहिए।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१२७

६८. एक सकल ग्राम्य संगठन, अच्छे कानून बनाने पर नहीं निर्भर करता, बल्कि अच्छे आदमियों पर निर्भर करता है, जो उसे अमल में लायें।

एम. जी. एस.—२८

६९. उच्चतम प्रकार की स्वतंत्रता अपने साथ, अधिकतम मात्रा में अनुशासन और नम्रता लिए होती है। एस. एम. जी.—१५

७०. व्यक्ति स्वातंत्र्य से इन्कार करने पर, किसी भी समाज की रचना संभव नहीं हो सकती।

जी. टी. जी.—१५१

७१. अस्पृश्यता का निवारण अहिंसा की उच्चतम अभिव्यक्तियों में से एक है। एम. जी. एस.—२४

७२. नशाबन्दी का अर्थ है सम्पुर्ण राष्ट्र का एक प्रकार का प्रौढ़-प्रशिक्षण न कि सिर्फ शराब की दूकानों का बन्द होना। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१३७

७३. किसी देश में सुव्यवस्था की पहचान वहाँ रहने वाले लखपतियों की संख्या से नह,ीं बल्कि उसकी आम जनता में भूखमरी की अनुपस्थिति से होती है।

डब्ल्यु. डब्ल्सु. जी.—१२७

७४. प्रजातंत्र चोगे या ऊपरी लवादे की रस्सियों के खिंचाव से दबकर टूट जायेगा। वह तो विश्वास पर ही टिका रह सकता है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१२४

७५. सबके सब नेता नहीं बन सकते, लेकिन सभी वाहक बन सकते हैं है। जी. टी. जी.—१६६

७६. यंत्र का अपना स्थान है; वह टिक गई है। पर इस आवश्यक मानवीय श्रम को विस्थापित करने की अनुमति कदापि नहीं दी जा सकती।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१३३

७७. साहस, साहिष्णुता, निर्भीकता और सब ऊपर —आत्मत्याग, ये गुण हमारे नेताओं में अपेक्षित है। जी. टी. जी.—१६६

७८. गरीबों की जेब उनसे अधिक गरीबों के हित में खाली करने में लज्जा का अनुभव नहीं करना, मैं ने सीख लिया है। डब्ल्यु. डब्ल्यु.जी.—८५

७९. शराबखोरी दुर्गुण नहीं एक रोग है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु.जी.—१३७

८०. जो विचार हमें ईश्वर से दूर ले जाते हैं या उसकी तरफ नहीं झुकाते, वे हमारे मार्ग में रुकावटें पैदा करते हैं। जी. टी. जी.—११९

८१. में मानता हूँ कि राजनीतिक जीवन तो निजी जीवन की प्रतिध्वनि के समान ही होना चाहिये, और दोनों के बीच में कोई विच्छेद या दुराव हो ही नहीं सकता। जी. टी. जी.—२०३

८२. सारे समाज की भलाई के लिए स्वेच्छापूर्वक सामाजिक निग्रह या संयम को, स्वीकार करना व्यक्ति को समाज को, जिसका कि वह एक सदस्य है, दोनों को समृद्ध बनाता है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—७९

जीवन के सिद्धान्त

१. अपनी प्रतिमाओं को रुपये पैसे में बदलने के बजाय देश की सेवा में लगा दीजिए।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—७९

२. सेवामय जीवन का नम्र होना, आवश्यक है। जो व्यक्ति अपना जीवन, दूसरों के लिए उत्सर्ग कर सकता है उसके पास अपने लिए समय ही नहीं बचता। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी—५०

३. आत्मोत्सर्ग ही ईमानदारी की सबसे सच्ची परीक्षा है। डी. बी. टी.—२६

४. नारी का वास्तविक आभूषण उसका चरित्र; उसकी पवित्रता ही है। जी. टी. जी.—१५८

५. बुराई के अपने पांव नहीं हैं जिन पर वह खड़ी रह सके। डी. बी. टी.—६८

६. टन भर उपदेश से कण भर आचरण कहीं अधिक होता है। जी. टी. जी.—२०५

७. महनतम अन्धकार को भी एक अकेला दीपक मिटाता है। डी. बी. टी.—७२

८. मानव के कर्त्तव्यों से प्रारम्भ कीजिए तो जिस प्रकार जाड़े का अनुसरण वसन्त ऋतु करती है, उसी प्रकार अधिकार कर्त्तव्यों का अनुसरण करेंगे। पी. पी.—२८५

९. जो सही लगे उस पर निर्भीकता से अमल करना ही स्वर्ण नियम है । एम. एम. जी.—६०

१०. गलती, बहुगुणित प्रचारों के कारण "सही" नहीं बन जाती है। जी टी. जी.—६६

११. मुझे विश्वास है कि जहाँ कायरता और हिंसा में से किसी एक का चुनाव करना हो वहाँ मैं कायरता की अपेक्षा हिंसा की सलाह दूँगा।

जी. टी. जी.—

१२. कायरता कभी नैतिक नहीं हो सकती।

एम. एम. जी.—५९

१३. वैवाहिक जीवन का मतलब है इस लोक और परलोक में पारस्परिक भलाई का प्रतिपादन करना।

एम. एम. जी.—२८०

१४. उन्मत्त जल्दबाजी नहीं बल्कि अविचलित शाँति ही बुद्धि प्रदान करती है। जी. टी. जी,—३००

१५. जब तक कोई उसमें आनन्द का अनुभव न करे, सेवा का कुछ अर्थ ही नहीं हो सकता। वह जब दिखावे के लिए अथवा जनमत के भय से की जाती है, तो व्यक्ति को नीचे गिराती है और उसकी आत्मा का हनन करती है।

डब्ल्यु. डब्लु. जी.—८०

१६. गति जीवन का लक्ष्य नहीं। मनुष्य अपने कर्तव्य-पथ पर कदम-कदम चलकर चल कर अधिक सही देखता है और अधिक ठीक जीता है।

जी. टी. जी.—२६४

१७. पूर्णतया संयमित विचार स्वयं ही उत्कृष्टतम शक्ति पुंज है और स्वचालित बन सकता है।

एम. जी. एस.—१६

१८. मेरे जैसे त्रुटिपूर्ण मर्त्यों (मरने वालों) की परीक्षा के लिए हमें सत्य के स्तर को वाल वरावर भी घटाना नहीं चाहिए। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१६७

१६. मेरे लेखों को मेरे शरीर के साथ जला देना। मैंने जो किया वही टिकेगा, जो कहा या लिखा है वह नहीं। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१६८

२०. अनचाहे वच्चे पैदा करना एक पाप है. पर किए के परिणामों को टालना तो मेरे विचार से उससे भी वड़ा पाप है।

एम. एम. जी.—२८७

२१. सविनय अवज्ञा केवल उसी दशा में एक गुण है जब कि किसी उच्चतर आवाहन पर उसका सहारा लिया गया हो, और उसमें लेशमात्र भी कटुता, शत्रुता या ईर्ष्या द्वेष न हो। एम.जी.एम.—१८

२२. जनसंख्या में वृद्धि, न कोई टालने लायक दुर्भाग्य है, न ऐसा समझा जाना चाहिए पर कृत्रिम उपायों से संतति नियमन तो पहले दर्जे का संकट है।

एम. एम. जी.—२८५

२३. मैंने यह सिद्धान्त बहुत पहले जान लिया था कि आवश्यकता से अधिक धन कभी किसी के अधिकार में नहीं रखना चाहिए।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—७४

२४. सर्वाधिक मूल्यवान उपाहारों को भी बिना मुआवजे और हिचकिचाहट के नष्ट कर डालना चाहिए, यदि वे किसी की नैतिक प्रगति में वाधा डालते हो। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—७५

२५. आप स्वयं अपने निर्णायक वनें तो आप सचमुच ही प्रसन्न हांगे। डी. बी. टी.—१०

२६. अप्रासंगिकता हमेशा असत्य है और कभी उच्चारित न की जानी चाहिए। एम. एम. जी.—४७

२७. भोजन तभी कीजिए जब आप भूखे हों और जब आपने अपने भोजन के लिए परिश्रम किया हो।

जी. जी.—७०

२८. सभ्यता आचरण की वह रीति है जो मनुष्य को कर्तव्य के प्रति निष्ठवान बनाती दर्शाती है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—४७

२९. विवाह का सही हेतु तो स्त्री और पुरुष के बीच घनिष्ठ मित्रता व सहचारिता है और होना चाहिए। एम. एम. जी.—२७९

३०. नारी को यह भूल जाना चाहिए कि वह कभी नर की कामवासना की वस्तु थी या हो सकती है और तभी वह नर की बराबरी में उसकी माँ, निर्माता एवं मूक मार्गदर्शन का अपना गौरवपूर्ण स्थान ग्रहण करेगी। एम. एम. जी.—२९४

३१. पुरुष ने अपनी कामवासना के लिए नारी को पर्याप्त रूप से अपमानित किया है और कृत्रिम तरीके उसे और अधिक नीचे गिरायेंगे।

एम. एम. जी.—२८६

३२. यदि हम न्याय चाहते हैं तो हमें भी दूसरों के प्रति न्याय बरतना होगा। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—७१

३३. हम सत्य की अपनी राह को अंधेरे में टटोलते हुए मृत्यु के बीच में जीते हैं। वाय. आई. १९२७

३४. गर्भ निरोधकों द्वारा अनचाहे बच्चों का आना भले ही रुक जाये, पर वह पुरुषों और स्त्रियों की जीवन-शक्ति को सोख लेगा।

एम. एम. जी.—२८७

३५. अपने कर्त्तव्य का पालन लोकमत से मुक्त होना चाहिए ।

डी. बी. टी.—१९

३६. यदि हमें प्रगति करनी है तो हमें इतिहास को दोहराना नहीं चाहिए बल्कि नया इतिहास बनाना चाहिये । डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१६४

३७. हिन्दू-मुस्लिम एकता हमेशा, हर समय तथा हर परिस्थिति में कायम रहने वाला हमारा आचार-धर्म होना चाहिये । जी. जी.—१००

३८. मृत्यु मनुष्य के विकास के लिए उतनी ही आवश्यक है, जितना स्वयं जीवन । डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—३७

३९. अपने आपको सजाने से इन्कार करें और सुगन्धित द्रव्यों के पीछे न भटकें । यदि आपको सच्ची सुगन्ध फैलानी है, तो वह आपके हृदय में से निकलनी चाहिये तब आप इन्सान को नहीं बल्कि इन्सानियत को वश में कर लेंगी ।

एम. एम. जी.—२९२

४०. मैं मानता हूँ कि चालाकी न केवल नैतिक दृष्टि से गलत है, बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी समयोपयुक्त नहीं है । एम. जी. एस.—१०

४१. गलती इन्सान से ही होती है, इसलिए गलती को स्वीकार कर लेना और ऐसा व्यवहार करना जो विपरीत प्रमाणित हो, इन्सानियत है ।

एम. जी. एस.—१०

४२. जहां प्रेम है वही जीवन है, घृणा विनाश की ओर ले जाती है, डी. बी. टी.—८

४३. अमृत के लिये तरस रही युद्धोन्मत्त दुनियां को शान्ति की कला सिखाना नारी का काम है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी—१४०

४४. हमारे शब्द हमारे बारे में बोलें, इससे बेहतर है कि हम अपने जीवन-चरित्रों को ही अपने लिए बोलने दें।

डी. बी. टी.—१५५

४५. अगर मनुष्य उतना ही अपने अधिकारों में रक्खे जितने की उसे आवश्यकता है, तो सारी दुनिया सन्तुष्ट रहेगी।

बी. आई.—१६३०

४६. प्रत्येक घर एक विश्वविद्यालय है और मां बाप ही शिक्षक हैं।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१४४

४७. बुनियादी रूप से पुरुष और स्त्री एक हैं, उनकी समस्या तत्वतः एक होनी चाहिये। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

एम. एम. जी.—२६४

४८. सच्ची कुलीनता स्वेच्छा से और जान बूझ कर सही काम करने में निहित है।

जी. टी.—७८

४९. आजादी की लड़ाइयाँ भारी मूल्य चुकाए बिना नहीं लड़ी जातीं।

जी. जी.—८८

५०. प्रेम जो न्याय देता है वह है समर्पण, कानून जो न्याय देता है वह है सजा।

डी. बी. टी.—३६

५१. अनुकूलनीयता का अर्थ अनुकरण नहीं है उसका अर्थ है प्रतिरोध और पचाने की शक्ति।

जी. टी. जी.—१६

५२. अनुशासन और निग्रह ही हमें पशु से अलग करता है।

एम. जी. एस.—१५

५३. पुरुष के उच्चतर ज्ञान की उद्दण्ड धारणा की अपेक्षा नारी की अंतः प्रेरणा अक्सर ज्यादा सही सिद्ध हुई है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१३८

५४. बलिदान जितना अधिक पवित्र होगा, विकास उतनी ही अधिक तेजी से होगा। जी टी. जी.—१९७

५५. स्व-आरोपित संयम कोई बाध्यता नहीं है।
एम. एम. जी.—१५

५६. अनुशासन और संयम के नियम की अवहेलना आत्महत्या है। एम. जी. एस.—१५

५७. तमाम सुधारों का उद्गम बहुसंख्यकों के खिलाफ अल्पसंख्यकों के उपक्रमण या अभिक्रमण में से होता है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—८९

५८. एकता हमारे समान उद्देश्य, समान ध्येय और समान (सहानुभूतियों) में निहित है।
एम. जी. एस.—५४

५९. सर्वोत्तम और सर्वाधिक ठोस कार्य अल्पसंख्यक की व्याकुलता में से हुआ है।
डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—५४

६०. जब आपका हृदय शुद्ध न हो और अपनी वासनाओं पर नियंत्रण न रख सकें तब आप एक शिक्षित मनुष्य नहीं रह जाते। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी—६६

६१. प्रतिकूलता या दुर्भाग्य वह कसौटी है जिस पर मित्रता परखी जाती है।
डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—५२१

६२. अदान्ति या असंयम ही संसार के सारे अहंकार या मिथ्याभिमान, क्रोध, भय तथा ईर्ष्या का मूल कारण है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—६६

६३. कभी अपनी क्षमता से आगे मत जाइये। वह भी सत्य का अतिक्रमण है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—५८

६४. सुधारक का मार्ग गुलाब के फूलों से नहीं बल्कि कांटों से आच्छादित रहता है, और उसे उन पर संघर्षरत होकर चलना पड़ता है। वह भले ही लंगड़ाता हुआ चल सकता है, पर कूदने का साहस नहीं कर सकता। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—८१

६५. मानवता कोई जलरोधी या जलाभेद्य डिब्बों या खानों में विभाजित नहीं है—जिससे हम एक में से दूसरे में जा सकें।

जी. टी. जी.—१३६

६६. लाखों लोग जिसे नहीं पा सकते, उसको रखने से दृढ़तापूर्वक इन्कार करना ही सुनहला नियम है। एम. एम. जी. —१९१

६७. कथन जब प्रासंगिक और सचमुच ही आज्ञात्मक या अनिवार्य हो जाता है तो बाह्य रूप में कठोर लगने पर भी सत्य कहना ही पड़ता है।

जी. जी.—२३४

६८. वास्तविक सम्पत्ति जिसे कोई माँ-बाप सबमें बराबर बराबर विभाजित कर सकते हैं, वह है पिता या माता का चरित्र या गुण तथा शैक्षणिक सुविधाएँ।

एम. एम. जी.—२८१

६९. सुधार की धुन भी मनुष्य के लिए मर्यादाओं को लाँघने का कारण नहीं बननी चाहिये।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—८१

७०. संयम या निग्रह हमारे अस्तित्व का विधान है। उत्कृष्टतम निग्रह के बिना उच्चतम पूर्णता दुर्लभ है। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—५७

७१. प्रत्येक अच्छा आन्दोलन पाँच अवस्थाओं में से गुजरता है—उदासीनता या उपेक्षा, व्यंग या उपहास दुरुपयोग या गाली, दमन या निरोध, और सम्मान या प्रतिष्ठा। डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—८४

७२. सन्तोष प्रयत्न में निहित है, न कि प्राप्ति में।

७३. गलती दुर्गुण की तरह छिपाव में पनपती है। सूर्य के प्रकाश से वह मर जाती है।

जी. टी. जी.—२९०

७४. कामवासना एक सुन्दर तथा उत्कृष्ट चीज है, किन्तु वह केवल सन्तानोत्पत्ति करने के लिए ही बनी है। उसका और कोई उपयोग ईश्वर तथा मानवता के विरुद्ध पाप है। एच.—१९३६

७५. नारी अपने आपको पुरुष की कामवासना का पदार्थ समझना बन्द करे। इसका इलाज पुरुष की अपेक्षा नारी के हाथों में अधिक है।

एम. एम. जी.—२९०

७६. एक शिष्ट घर के बराबर कोई पाठशाला नहीं है, और ईमानदार सद्गुणी (सदाचारी) माँ बाप के बराबर कोई शिक्षक नहीं है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—१४५

७७. सेवा और त्याग-भावना की जीवित मूर्ति के रूप में मैंने नारी की पूजा की है।

डी. बी. टी.—२७

७८. केवल सत्य ही असत्य को बुझाता है। प्रेम क्रोध को शान्त करता है।

डब्ल्यु. डब्ल्यु. जी.—७०

जन संपर्क समिति
राष्ट्रीय गाँधी जन्म शताब्दी समिति

अध्यक्ष : देवेन्द्र कुमार गुप्ता
मन्त्री : एस. एन. सुब्बा राव

दूरभाष : 274755 तार : "शताब्दी"

राजेश प्रेस दिल्ली-६ : दूरभाष २२८५१६

जुलाई १९६९—५०००